

आदिशंकराचार्य की प्रतिमा

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस](#)

चर्चा में क्यों?

मध्य प्रदेश (MP) के मुख्यमंत्री ने खंडवा ज़िले के ओंकारेश्वर में मांधाता पर्वत पर आदिशंकराचार्य की 108 फीट ऊँची 'स्टैच्यू ऑफ वननेस' का अनावरण किया और अद्वैत लोक की आधारशिला रखी।

मांधाता की महत्ता:

- मांधाता द्वीप, जो कनिर्मदा नदी पर स्थित है, 12 ज्योतिरलिंगों में से दो ज्योतिरलिंग- पहला- द्वीप के दक्षिण की ओर स्थित ओंकारेश्वर तथा दूसरा अमरेश्वर है।
- इस द्वीप पर 14वीं और 18वीं शताब्दी के शैव, वैष्णव तथा जैन मंदिर हैं।
- 'ओंकारेश्वर' नाम द्वीप के आकार से लिया गया है, जो पवित्र शब्दांश 'ॐ' जैसा दिखता है, और इसके नाम का अर्थ है 'ओंकार के ईश्वर'।



आदिशंकराचार्यः

परिचयः

- वह आदिशंकर (788-820 ई.पू.) के नाम से जाने जाते हैं और उनका जन्म केरल के कोच्चि के पास कलाडी में हुआ था।
- उन्होंने 33 वर्ष की आयु में केदार तीर्थ पर समाधि ली।
- वह शिव के भक्त थे।
- ऐसा कहा जाता है कि वह एक युवा भिक्षु के रूप में ओंकारेश्वर पहुँचे थे, जहाँ उनकी भेंट अपने गुरु गोवदि भगवत्पाद से हुई थी।
- वह चार वर्षों तक इस पवित्र शहर में रहे और शिक्षा प्राप्त की।
- उन्होंने 12 वर्ष की उम्र में ओंकारेश्वर छोड़ दिया और पूरे देश की यात्रा पर निकल पड़े, उन्होंने अद्वैत वेदांत दर्शन की शिक्षाओं का प्रसार किया एवं लोगों तक इसके सिद्धांतों को पहुँचाया।
- उन्होंने अद्वैत सिद्धांत (अद्वैतवाद) का प्रतिपादन किया और वेदिक सिद्धांत (उपनिषद, ब्रह्म सूत्र तथा भगवद् गीता) पर संस्कृत में कई टिप्पणियाँ लिखीं।
- वह बौद्ध दार्शनिकों के वरिधी थे।

प्रमुख शास्त्रः

- ब्रह्मसूत्रभाष्य (ब्रह्मसूत्र पर भाष्य)
- भजगोवदि स्तोत्र
- नरिवाण षटकम्परा
- करण ग्रंथ

अन्य योगदानः

- जब बौद्ध धर्म लोकप्रियता हासिल कर रहा था तब वे भारत में हिंदू धर्म को पुनर्जीवित करने के लिये काफी हद तक ज़िम्मेदार थे।
- सनातन धर्म के प्रचार के लिये भारत के चार कोनों शृंगेरी, पुरी, द्वारका और बदरीनाथ में चार मठों की स्थापना की गई।

अद्वैत वेदांतः

- यह कट्टरपंथी अद्वैतवाद की एक दार्शनिक स्थिति को स्पष्ट करता है, एक पुनरीक्षण दृष्टि जिसे यह प्राचीन उपनिषद ग्रंथों से प्राप्त करता है।
- अद्वैत वेदांतियों के अनुसार, उपनिषद अद्वैत के एक मौलिक सिद्धांत को प्रकट करते हैं जिसे 'ब्राह्मण' कहा जाता है, जो सभी चीज़ों की वास्तविकता है।
- अद्वैतवादी ब्राह्मण को व्यक्तित्व और अनुभवजन्य बहुलता से परे समझते हैं।
- वे यह स्थापित करना चाहते हैं कि किसी व्यक्ति का मूल (आत्मन) ब्रह्म है।
- अद्वैत वेदांत इस बात पर जोर देता है कि आत्मा शुद्ध अनेच्छक चेतना अवस्था में होती है।
- अद्वैत एक क्षणरहित और अनंत अस्तित्ववादी है तथा संख्यात्मक रूप से ब्रह्म के समान है।

अन्य प्रसिद्ध मूर्तियाँ:

- इससे पहले भारत के प्रधान मंत्री (PM) ने 11वीं सदी के भक्तिसिंह शरी रामानुजाचार्य की 1,000वीं जयंती पर उनकी स्मृति में हैदराबाद के बाहरी क्षेत्र में स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी का उद्घाटन किया था।
- वर्ष 2018 में PM ने पूर्व उप प्रधान मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल की याद में गुजरात के केवडिया में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का उद्घाटन किया।